मोरंगे

नवम्बर – दिसम्बर 2024

इस बार

खिड़की

हान कांग को नोबेल पुरस्कार
नानी की याद – हान कांग

गीत कविताएँ

खेतों में कटाई – संजना वर्मा
मेरी प्यारी नानी – मुस्कान बानो
प्यारी भैंस – इमराना बानो
बकरी और चरनी – इमराना बानो
पुए का धुँआ – आशा यादव
दस्तकार – अलमास बानो

कहानियाँ

तोता और बाज – सोनम बानो
कोयल – मोनिका माली
बनास – अज्ञात
जामुन का पेड़ और छह बच्चे – विक्रम सैनी

मनीषा बैरवा, फैलो, पुस्तकालय सेंटर, कटार

याद की धूप छाँव में

राहत की साँस – गोपी बावरी
मेमना और हम सब दोस्त – सोनम बानो
नदी खेत पर एक दिन – अल्समा खान
चलो आज खेत में घूम आते हैं – इमराना बानो

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

कीड़ों की बारिश – विष्णु गोपाल मीना

बतरस

मेरी तीन बातें – प्रिया मीना

बात लै चीत लै

भालू और बकरी

गतिविधि, पहेलियाँ और हीहीठीठी

मनीषा बैरवा, फैलो, पुस्तकालय सेंटर, कटार

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : किशन मीना
वर्ष 16 अंक 173–174

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान 322001
टेलीफोन 07462–220957

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

खिड़की

हान कांग को नोबेल पुरस्कार

मोरंगे में इस बार आपको मिलाते हैं, इस साल की नोबेल पुरस्कार विजेता लेखिका हान कांग से। आप तो जानते ही हैं नोबेल पुरस्कार दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार है। ये पुरस्कार हर हर साल विज्ञान, शांति और साहित्य आदि क्षेत्रों में किए गए सर्वश्रेष्ठ काम के लिए दिए जाते हैं।

कोरिया देश की लेखिका हान कांग को यह पुरस्कार उनके उपन्यास 'द वैजीटेरियन' के लिए दिया गया है। इससे पहले कोरिया में किसी को नोबेल पुरस्कार नहीं मिला था। कोरिया देश को नोबेल पुरस्कार की बड़ी चाहत थी। इस चाहत से जुड़ा एक किस्सा आपको सुनाता हूँ। उस देश में किताबों की एक मशहूर दुकान है जिसका नाम है 'क्योबो'। कहते हैं यह किसी

छोटे से मैदान के बराबर क्षेत्र में बनी है। इस विशाल दुकान में लगभग तेबीस लाख किताबें सजी रहती हैं। इसकी एक दीवार कई दशकों से सूनी थी। उस पर एक बोर्ड टँगा हुआ है, जिस पर लिखा था ''साहित्य नोबेल पुरस्कार विजेता के लिए आरिक्षित।' उस देश का सपना था कि किसी वर्ष उनके देश के किसी लेखक या लेखिका को नोबेल पुरस्कार मिलेगा। उसकी किताब वे इस दीवार पर सजाएँगे। इस साल 2024 के अक्टूबर महीने की 10 तारीख को उस देश का सपना पूरा हो गया। कोरिया की लेखिका हान कांग को नोबेल पुरस्कार मिल गया।

हान कांग के पिता कहते हैं–'कभी कभी वह दोपहर में गायब हो जाती थी, और शाम में जब मैं उसे ढूँढता था तो वह कमरे के अँधेरे कोने में चुपचाप अकेली बैठी दिखती थी। मैं अचरज से पूछता था–'तुम यहाँ क्या कर रही हो। तो वह कहती थी –'मैं सपने देख रही हूँ। क्या मैं सपने नहीं देख सकती?'

हान कांग के बड़े भाई भी लेखक हैं और वे पिछले बीस बरस से बच्चों के लिए कहानियाँ और उपन्यास लिख रहे हैं। हान कांग को बचपन से ही किताब पढ़ने का बहुत शौक था। उनकी सबसे अच्छी दोस्ती किताबों के ही साथ थी। किताबें उन्हें ऐसी लगती थी जैसे ये इनमें भी जान हो और ये भी किसी जीवित प्राणी की तरह हों।

इस बार मोरंगे के खिड़की स्तम्भ में आप पढ़िए हान कांग की एक छोटी सी रचना जो उन्होंने अपनी नानी को याद करते हुए लिखी है।

नानी की याद

जब कभी सहसा नानी के बारे में सोचती हूँ तो सबसे पहले जो तस्वीर मेरे जेहन में कौंधती है, वह है टकटकी लगाकर मुझे निहारता हुआ उनका चेहरा। प्यार भरी आँखों से वह टुकुर टुकुर मेरे चेहरे को निहारती, फिर अपना हाथ बढ़ाकर मेरी पीठ को थपथपाती। मैं जानती थी कि मुझे देखकर उनके दिल में प्यार का समन्दर लहराता था, क्योंकि मेरा चेहरा उन्हें अपनी इकलौती बेटी की याद दिलाता था। यह मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मेरी पीठ थपथपाने के बाद वह हमेशा एक ही बात दोहराती–'तुम्हारा चेहरा सच में तुम्हारी माँ पर गया है। आँखें तो हूबहू उसी के जैसी हैं।'

मेरे ननिहाल में रसोईघर के अंदर एक बडा–सा भंडार घर था। जब मैं छोटी थी और स्कूल की छुट्टियों में ननिहाल जाती थी, तो नानी सबसे पहले मेरा हाथ पकड़कर भंडारघर में ले जाती थीं। फिर वह अलमारी खोलती थीं और खाने की चीज निकालकर मेरे नन्हे हाथों में पकड़ा देती थी। जैसे ही मैं खाने की चीज को मुँह में रखती थी, नानी के चेहरे पर हर्षोल्लास की अद्भुत रोशनी छिटक उठती थी। ऐसा लगता था जैसे मेरे और उनके दिल किसी बिजली के तार से जुडे हों और दोनो दिलों में एक साथ बल्ब जल उठे हों और प्रकाश फैल गया हो।

शादी के बाद मेरी नानी को एक बेटा हुआ। सबसे बड़े बेटे के जन्म से लेकर सबसे छोटी बेटी के जन्म तक की बारह साल की अवधि में उनके तीन बच्चे हुए, लेकिन वे सभी किसी न किसी रोग के चपेट में आकर अपना पाँचवाँ सालगिरह भी न पार कर सके। उसके बाद जब मेरी माँ का जन्म हुआ, नानी कुछ उम्रदराज ही चुकी थीं। मैं जब नानी से पहली बार मिली, उनके बाल पके हुये थे। मेरे लिये नानी शुरू से ही सफेद पक्षी के पंख जैसे बालों वाली महिला थीं।

मार्च 1989 में कॉलेज में दाखिला लेने के बाद जब जून के अंत में गर्मी की छुट्टी हुई। मैं अकेले नानी के घर गयी और उनके साथ कुछ दिन रही। जिस दिन मुझे सेओल वापस लौटना था, सुबह उठकर मैंने अपने पैर के नाखून काटे। मुझे नाखून काटते देखकर नानी ने कहा, "कितनी होशियार लडकी है, (जीवित कोषिकाओं को बचाते हुये नाखून काटने पर खुशी का इजहार)। बिल्कुल भी दर्द नहीं हुआ होगा। तुम्हारी माँ ने अच्छी तरह से तुम्हारी परवरिश की। तुम्हें अच्छे से पाला।" यह बुदबुदाते हुये उन्होंने मेरे बालों को सहलाया। उस दिन उनसे विदा लेते समय उन्होंने हिदायत के वही शब्द दुहराये जो वह हमेशा कहती थीं –'सेहत पर ध्यान देना, बीमार मत पडना, माँ की बात मानना।'

उसी वर्ष अक्टूबर महीने में मुझे खबर मिली कि नानी चल बसीं। खबर सुनते ही मैं ननिहाल पहुँची। मेरी माँ वहाँ पहले ही पहुँच गयी थी। उन्होंने मुझसे पूछा, नानी का अंतिम दर्शन करोगी न? जब मैंने सिर हिलाया, उन्होंने मेरे हाथों को अपने हाथों में थाम लिया और फिर वह मुझे पर्दे के पीछे ले गयीं।

वहाँ मैंने चिरनिद्रा में लीन नानी का शांत चेहरा देखा और हाथ जोड़े।

जब मैं असाधारण रूप से सफेद पंखों वाली किसी चिडियाँ को देखती हूँ तो मेरे हृदय का अंधकक्ष अकस्मात आलोकित हो जाता है, जैसे कि किसी ने बल्ब के स्विच को ऑन कर दिया हो।

हान काँग
अनुवाद – (मूल कोरियाई से) पंकज मोहन

गीत कविताएँ

खेतों में कटाई

खेतों में बाजरे की
कटाई चल रही है
मजूरों की बढ़िया
कमाई चल रही है

संजना वर्मा, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

प्यारी भैंस

भैंस हमारी प्यारी भैंस
देती हमको दूध
कैसे दूध मिलेगा हमको
अगर जाए ये रूँस

इमराना बानो, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

संजना वर्मा, कक्षा–9, उमंग सेंटर दौबड़ा

मेरी प्यारी नानी

अम्मी की अम्मी है नानी
जिससे हमने सुनी कहानी
छुट्टी के दिन जब आते हैं
चाव से नानी के जाते हैं
मेरी प्यारी नानी
आई मिस यू नानी

मुस्कान बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

मुस्कान बानों, कक्षा–9, उमंग सेंटर मखौली

बकरी और चरनी

बकरी हमारी प्यारी बकरी
रोज दो इसको चरनी
चरनी न दो तो बकरी को
बस में में में करनी

इमराना बानो, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

दस्तकार

औरतें और आदमी
दस्तकार थे वहाँ सभी

कोई कपड़ा धो रहा था
कोई कपड़ा रंग रहा था
कोई कपड़ा सुखा रहा था
कोई कपड़ा सिल रहा था

कोई चिड़िया बना रहा था
कपड़े की
कोई ऊँट घोड़ा गाड़ी
मिट्टी की

पानी भरा था पास ही
जिसमें नहा रहा था कोई
जब काम से फुर्सत हुई

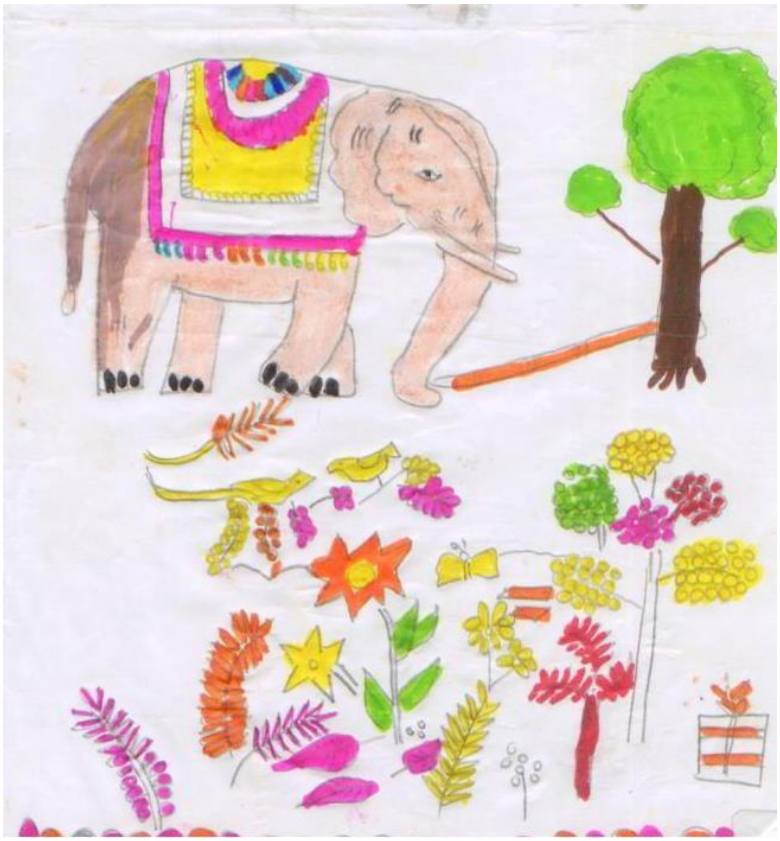

अलमास बानों, कक्षा–9, उमंग सेंटर दोबड़ा

अलमास बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

पुए का धुँआ

एक दिन मुझे मिला एक चूहा
मुँह से निकल रहा था धुँआ
मैंने पूछा भाई ये क्या हुआ
बोला– खा लिया गर्म पुआ

आशा यादव, शिक्षिका, उमंग, जगनपुरा।

कहानियाँ

तोता और बाज

एक तोता जंगल में घूम रहा था। उसने एक बाज को देखा तो वह डर गया। तोता एक पेड़ पर जा बैठा। वह सोच रहा था–'बाज यहाँ से उड़ जाए तो मैं भी यहाँ से उड़ जाऊँ।'

बाज कुछ शिकार ढूँढ रहा था।

तोते ने सोचा–'मैं यहाँ से उड़ ही जाऊँ। नही ंतो ये बाज मेरा शिकार बना लेगा। मुझे मार देगा।' तोता बहुत डर गया था।

बाज को बहुत लग रही थी। उसे एक कौआ दिख गया।

'बाज कौअे से पंगा नहीं लेता।' ऐसा मुझे फरदीन भाई ने बताया था।

बाज एक पेड़ पर जा बैठा। उसे दूर एक शिकार दिखाई दे गया तो वह उधर उड़ गया।

अब तोता वहाँ से निकल गया। वह उड़ गया। तोते की जान बच गई।

दिलखुश बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

सोनम बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

कोयल

एक पेड़ में एक कोयल रहती थी। वह भोजन लेने रोजाना पहाड़ों की तरफ के जंगल में जाती थी। एक दिन बहुत जोर से आँधी–तूफान आया। जिसके कारण उसे भूखा ही रहना पड़ा। वह दूसरे दिन वहाँ गई तो उसने देखा–'सब कुछ उलट पलट हो गया है। पेड़ा पौधे उखड़ गए हैं। वह अपने पेड़ पर वापस आ गई ओर रोने लगी।

तभी एक चिड़िया वहाँ आई और बोली–'तुम क्यों रो रही हो?'

कोयल ने कहा–'मैं दो दिन से भूखी हूँ।'

चिड़िया ने कहा–'मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलूँगी जहाँ तुम्हें भोजन मिल जाएगा।'

कोयल चिड़िया के साथ उस जगह पर गई। वहाँ उन्हें भोजन मिल गया।

चिड़िया ने कहा–'आँधी तूफान में बहुत कुछ नष्ट हो जाता है लेकिन कहीं न कहीं जरूर कुछ बचा भी रहता है। इसलिए रोने की कोई बात नहीं है।'

भोजन ढूँढ लेने के बाद कोयल ने भी जान लिया था कि 'चिड़िया की बात सही है।' और उसने सोचा–'रोने से खोजने से भोजन मिलता है।'

कुहू कुहू गाते हुए कोयल यही गीत गाने लगी।

मोनिका माली, कक्षा–10, उमंग सेन्टर, शेरपुर।

कोयल, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

बनास

पिछले साल की बात है। बनास नदी के किनारे के जंगल की बात। गाँव की सारी औरतें लकड़ियाँ लेने जाती थी। एक दिन जब वो लकड़ियाँ बीन रही थी तो झाड़ियों में से कुछ आवाज सुनाई दी। उन्होंने सोचा कि हवा चल रही है। इसलिए झाड़ियाँ हिल रही हैं। फिर उनको आगे थोड़ी अच्छी सूखी लकड़ियाँ दिखी। वे सब बातें करने में व्यस्त थी। कह रही थी –'यहाँ पर अच्छी लकड़ियाँ हैं।'

फिर वे लकड़ियाँ इकट्ठी करती हुई इधर उधर हो गई। तभी एक औरत को फिर से आवाज सुनाई दी। उसने ध्यान से सुना। फिर उसने झाड़ियों में से देखा तो वहाँ बाघिन अपने बच्चों को दूध पिला रही थी। लेटी हुई थी।

उस औरत ने सबसे भागने को कहा। उस बाघिन ने सुन लिया। वह उठ खड़ी हुई। पर उसके बच्चों ने उसे वापस बैठा लिया।

आस्था वर्मा, गाँव–शेरपुर

सभी औरतें सूखी लकड़ियों को लिए गिरती पड़ती भाग रही थी। किसी किसी को तो चेट भी लग गई थी। कई औरतों ने घर जाकर ही साँस ली। फिर सबने अपने घर वालों से कहा कि आज तो ऐसा हुआ।

(कहानी के साथ नाम नहीं भेजा गया था)

जामुन के पेड़ और छह बच्चे

गर्मी की छुट्टियों के बाद की बात है। हम छह बच्चे थे–विक्रम, सोनू, विशाल, अक्षय, नरेन्द्र और शिवम। हम खेत पर गए थे। हमें एक जामुन का पेड़ दिखाई दिया। हम जामुन तोड़ने लग गए। हमने बहुत सारे जामुन तोड़ लिए थे। वहीं खेत पर एक कुआँ था। हमने वहाँ पर पानी और वहाँ से चल दिए।

हम दूसरे रास्ते से घर आ रहे थे। इस रास्ते में हमें जामुन के तीन पेड़ दिखाई दिए। हम दौड़कर जामुन के पेड़ों में चढ़ने लगे। एक पेड़ में दो बच्चे थे– विक्रम और विशाल। जामुन तोड़ते हुए दोनों एक ही डाली पर आ गए। डाली टूट गई। विक्रम तो जमीन पर गिर पड़ा और विशाल एक डाली में ही लटका रह गया।

फिर हम घर आ गए। हमें रास्ते में एक बुढ़िया मिली। उसने हमसे सारे जामुन ले लिए। हमें बहुत दुख हुआ। फिर हम घर आ गए। हमने जामुन पेड़ों पर तो खाए पर घर एक भी जामुन नहीं ला पाए।

विक्रम सैनी, 13 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला।

भूमिका मीना, शिक्षिका, उमंग सेंटर मखौली

याद की धूप छाँव में

राहत की साँस

उस दिन मुझे स्कूल पहुँचने में देर हो गई। मुझे डर लगने लगा। मैडम और सर बहुत मारेंगे। मैंने सोचा कि आज स्कूल नहीं जाता हूँ। लेकिन फिर चार बजे तक क्या करूँगा। कहाँ रहूँगा। घर गया तो मम्मी मारेगी। मारते मारते स्कूल ले आएगी। स्कूल में मैडम मारेगी। दो जगह की मार के बजाय एक जगह की ही ठीक है। मैं डरते डरते स्कूल में घुस गया। तब तक पहला पीरियड लग चुका था। पीटीआई सर कक्षाओं को देख कर रहे थे। अगर मैं कक्षा में नहीं गया और बाहर दिखा तो पीटीआई सर मारेंगे और मुझे घर भेज देंगे।

मैंने तय किया कि पीटीआई सर मेरी कक्षा तक पहुँचे उससे पहले कक्षा में स्कूल बैग को पहुँचा देता हूँ। और जल्दी से टॉयलेट की तरफ चल जाता हूँ। पूछेंगे तो कह दूँगा–'टॉयलेट गया था।' पीटीआई सर बोलेंगे–'दौड़कर क्लास में जाओ।'

मैंने जैसा सोचा वैसा ही हो गया था और मैं कक्षा में पहुँच गया था। मैंने राहत की साँस ली।

खेल घण्टी में हम सब बच्चे लाइन से प्लेट लेने लगे। और लाइन से बैठ गए। फिर सबने खाना खाया और खेलने के लिए मैदान में चले गए।

पीटीआई सर ने जैसे ही सीटी बजाई हम अपनी अपनी क्लास में चले गए।

तीन बजे स्कूल में एक सभा हुई। सब बच्चों को बुलाया और बरामदे में बिठाया। फिर हमें बताया गया कि जो बच्चे रोज स्कूल आते हैं, उन्हें ईनाम मिलेगा। कुछ ही बच्चों को बुलाया गया था। उनमें से मैं भी एक था। एक एक कर सब ईनाम लेने पहुँचे। मैं भी पहुँचा। मुझे इनाम में एक कापी और एक पेन मिला।

मुझे रोककर पीटीआई सर ने बताया–'ये वो बच्चा है जो रोज स्कूल आता है। कभी लेट नहीं होता है। और जानते हो यह बावरी (झुग्गी) बस्ती से आता है। यह एक दिन भी नहीं रुकता। यही इसकी खास बात है। इतना ही नहीं उस बस्ती से जो दूसरे बच्चे आते हैं। उन्हें भी यह साथ लाता है और साथ लेकर जाता है। सबका बहुत खयाल रखता है। इसका नाम है गोपी। ताली बजाओ सब गोपी के लिए।

मुझे बहुत अच्छा लगा। सभा के बाद छुट्टी हो गई। मैं घर आ गया।

गोपी बावरी, फोरम थिएटर, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाईमाधोपुर।

मेमना और हम सब दोस्त

उस रोज हम सब दोस्त जंगल में बकरियाँ चराने गए थे। वहाँ बहुत सारी सारी भेड़ें थी। भेड़ें चरते चरते हमारे खेत में आ गई। उनमें बहुत सारे मेमने भी थे। हमने एक मेमना माँगा।

भेड़ वाले ने कहा–'बेटा यहीं खिला लो। अभी यह छोटा बच्चा है तो यह नहीं दूँगा। बड़ा हो जाएगा तक दूँगा।'

हमने कहा–'फिर हमें यह कहाँ मिलेगा। अभी तो मिल गया है।'

वह इतना अच्छा था कि जवाब नहीं।

भेड़ वाले के पास बहुत सारी भेड़ें थी और उनके बहुत सारे मेमने थे। पर उसने वह मेमना हमें नहीं दिया। फिर हमने वहीं उसे खूब खिलाया। खूब मस्ती की।

फिर भेड़ वाला हमसे उस मेमने को लेकर चला गया।

हम सब दोस्त हमारी बकरियों को लेकर घर आ गए थे। पर हमें उस मेमने की बहुत याद आ रही थी।

सोनम बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

संजना वर्मा, कक्षा–9, उमंग शिक्षण केन्द्र दौबड़ा

नदी खेत पर एक दिन

एक दिन मैं खेत पर गई। खेतों के पास ही नदी बह रही थी। मैंने नदी देखी और कुछ फोटो खींचे। वहाँ अमरूदों के बगीचे भी थे। उन बगीचों में बारिश का पानी भरा था। मैं उन पेड़ पौधों को देखती रही। अमरूद के पेड़ों में कच्चे अमरूद आ रहे थे।

मेरी मम्मी और मेरे बहन भाई भी साथ थे। वहीं हमारा कुआँ भी था। लेकिन वो थोड़ी दूर था। हम कुएँ तक पैदल पैदल गए। वहाँ पास ही दो नदी बह रही थी। वहीं खेत में नीबू के पेड़ थे। हम कुछ नीबू तोड़कर लाए।

घर आकर हमने नीबू की शिकंजी बनायी। पहले जग में ठण्डा पानी डाला। फिर नीबूओं को काटकर निचोड़ा। रस को जग में गिराया। शक्कर डालकर घोली। इस शिकंजी को मैंने, मेरी मम्मी और मेरे बहन भाई ने पिया। एकदम से ताजगी आ गई। खेत और नदी से मिली ताजागी तो पहले से ही थी। शिकंजी ने उसे और बढ़ा दिया।

उदय सामुदायिक पाठशाला कटार के भवन की दीवार पर

अल्समा खान, उमंग सेन्टर, मखौली।

चलो आज खेत में घूम आते हैं

एक सुबह मेरी माँ मुझे जगाते हुए बोली–'चलो आज खेत में घूम आते हैं। पेड़ों में खाद भी दे आएँगे। सुबह सुबह बहुत अच्छी हवा चल रही थी। और उस दिन स्कूल की भी छुट्टी थी। घर में चाय की अच्छी खुशबू आ रही थी। नाश्ता करके हम खेत पर जाने के लिए रवाना हुए। हमारे साथ, मेरे भाई–बहन और चाचा चाची भी थे। खेतों में पहुँच कर सबसे पहले पेड़ों में खाद दी। फिर खरपतवार हटाने और गुड़ाई करने लगे। खेतों में काम करते करते कई घण्टे बीत गए।

हमारा साजी (साझेदार) भी वहीं रहता है खेतों पर ही। उसने दो कुतिया और एक कुत्ता पाल रखा है। मैं उन्हें देखने लगी। तभी माँ ने कहा–'चलो पानी ले आते हैं।' हम पानी लेने पहुँचे। बाल्टी में पानी लिया और हम वापस खेत पर जा रहे थे। तभी मुझे एक पीले रंग की साँपिन दिखी। वो हमारे खेत के कुएँ के अन्दर जा रही थी। कुआँ काफी दिनों से खाली पड़ा था। मैंने माँ से कहा तो माँ बोली–'कोई बात नहीं। अभी बरसात का मौसम है। इस मौसम में इनके रहने की जगह में पानी भर जाता है। इसलिए ये नई जगह ढूँढने निकलते ही हैं।'

मैं सोचने लगी–'हम अभी इसे छेड़ देते तो क्या होता!'

वो चुपचाप चली गई।

हम अपने खेत की ओर चले गए।

इमराना बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

उदय सामुदायिक पाठशाला कटार के कक्षाकक्ष में बना म्यूरल

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

(पहली उदय सामुदायिक पाठशाला बनने के दिनों और उसके पहले अध्यापक के किस्से आप पहले भी 'टापरी वाला स्कूल' शीर्षक से मोरंगे में पढ़ चुके हैं। ये उनसे आगे के किस्से हैं। असल में बीस किस्सों की यह सुदीर्घ श्रृंखला है जिसमें स्कूल के पहले अध्यापक ने अपने उन रोमांचकारी दिनों को याद किया है। कठिन दिनों की मीठी यादों के उस रोमांच को आप भी निश्चित ही महसूस कर पाएँगे।)

कट्टे की चटाई

टापरी वाला स्कूल तो बन कर तैयार हो गया था। सामुदायिक सहयोग से ग्रामीण महिलाओं ने कक्षा कक्षों को गारा मिट्टी से लीप कर तैयार कर दिया और उस पर गेरू और खड़ी से माँडणे माँड दिए। कक्षा कक्ष अब सुन्दर दिख रहे थे। पर बच्चे अभी लीपे हुए फर्श पर ही ही बैठ रहे थे। उनके लिए चटाई खरीद कर लाना महँगा सौदा होता। इसलिए हमने तय किया कि खाद के खाली कट्टे एकत्र कर उनसे चटाई बनालें।

आईडिया अच्छा लगा। पर जल्द ही समझ में आया कि किसानों के पास एक दो कट्टे ही होते हैं जो उनके अनाज और आटे के काम आते हैं। किसी ने बताया कि कुण्डेरा के बनिये के पास खाली कट्टे मिल जाएँगे।

मैं और मेरा साथी मुकेश जीप में बैठकर कुण्डेरा गये। जीप वाले हमें छापर वाले गुरूजी के नाम से जानने लगे थे। इसलिए कई बार हमसे किराया नहीं लेते थे। मानो उनको भी पता हो कि हमारे पास कोई फण्ड नहीं होने बाद भी हम स्कूल चलाने का प्रयास कर रहे हैं। बनिये से हमने करीब 150रू. में 30 कट्टे लिए और वापस आ गये।

अब बारी थी कट्टों को खोलकर सिलने की। इस काम में कट्टों से भी ज्यादा पैसा लगना था। रोजाना स्कूल पर आने वालों में एक व्यक्ति ऋषिकेश भी था। वह अपनी ट्राईसाइकिल को हाथ से चलाता हुआ आता और हमारे काम को ध्यान से देखता और समझने का प्रयास करता। जब ऋषिकेश को यह बात पता चली तो उसने हमसे कहा, ''अगर सुई धागे का इन्तजाम कर दो तो सिलाई तो मैं कर दूँगा। मेरे घर पर सिलाई मशीन है।'' इस तरह से लगभग फ्री में बच्चों के बैठने के लिए पतली लेकिन खूब बड़ी चटाई तैयार हो गई।

कीड़ों की बारिश

टापरी के अन्दर दिन में बच्चे पढ़ते और उनके जाने के बाद हम बच्चों के कार्य की समीक्षा करते और आगे की योजना बनाते। सुबह–शाम को समुदाय सम्पर्क करने जाते। जब से टापरी बनी थी तब से ही मैं टापरी में ही रहने लगा। उस समय आस–पास कोई घर नहीं था। लोग दिन छिपने के बाद उस तरफ आने से डरते थे। अक्सर मुझे भी पुराने किस्से सुनाकर डराते और कहते गाँव में चले जाया करो यहाँ जंगली जानवर भी आ जाते हैं। पर मेरा एक ही जवाब होता ''आपने पहले कहा होता तो बात अलग होती अब तो मैं कुछ दिन से रह रहा हूँ तो मुझे कोई डर नहीं लगता।''

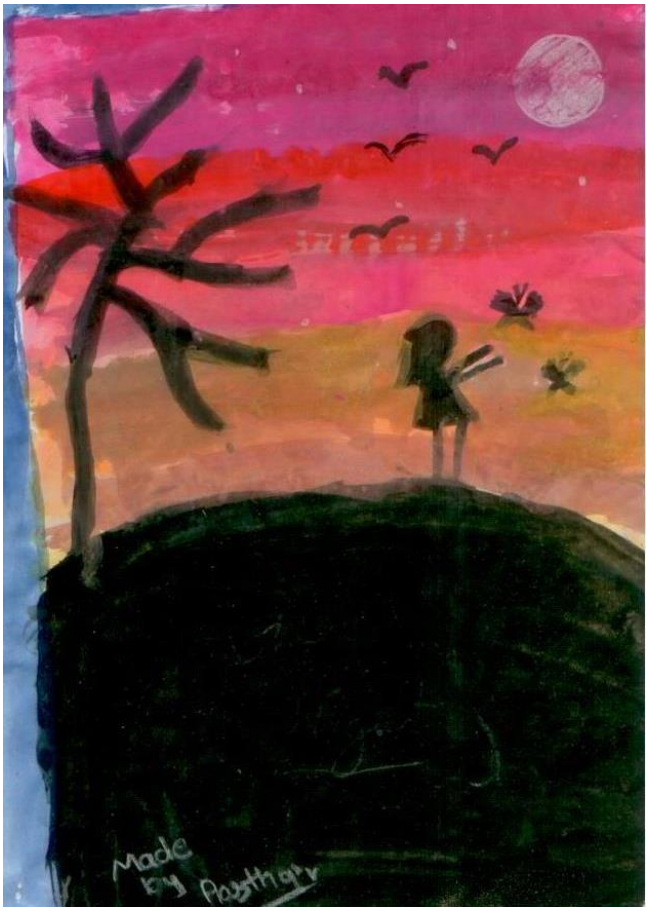

आस्था वर्मा, गाँव शेरपुर

बारिश तो जैसे टापरी बनने का ही इन्तजार कर रही थी। बाजरे की कडप से बनी छान पहली बारिश में ही भीग गई और अन्दर पानी भर गया। सारा सामान भी भीग गया। मैंने जैसे तैसे बैठे–बैठे रात गुजारी और सुबह मौसम साफ होते ही बिस्तर और दूसरे सामान को धूप में सुखाया। कक्षाओं में गीला हो गया। जमीन के नीचे से केंचुए निकलकर इधर–उधर घूमते हुए पानी और भोजन की तलाश करने लगे। उस दिन बच्चों को खुले मैदान में बिठा कर अध्ययन करवाया गया।

इस नई समस्या से निपटने के लिए बाजार से काली पन्नी लाकर गाँव वालों की मदद से छान को ढँका गया। अब ऊपर से पानी आना बंद हो चुका था। पर ये खुशी ज्यादा दिन नहीं रही।

दो दिन बाद जब बच्चे और शिक्षक अपने–अपने घर चले गये तब एक जोर की आँधी आई और उसके वेग से तिरपाल फड़फडाने लगा। मुझे लगा कुछ नही किया गया तो तिरपाल उड़ जाएगा। मैं छान के उपर गया और तिरपाल को पकड़ कर ठीक करने लगा। हवा के वेग के सामने मेरी कोशिस बेकार साबित हो रही थी। तिरपाल में हवा इतने जोर से भरने लगी की

वह मुझे भी उड़ाने लगी। अंत में खुद के उड़ जाने की प्रबल संभावना बनने पर मैंने तिरपाल को छोड़ दिया। छान तो बच गई पर तिरपाल कई जगह से फट कर उड़ गया। आँधी थमने के बाद तिरपाल की खबर ली गई और एक बार फिर गाँव के लोगों की मदद से टुकड़ों को जोडते हुए छान को ढँक दिया गया। बात यहीं पर खत्म हो जाती तो भी गनीमत होती। पास में मूँगफली के खेतों से चूहे आकर छान में रहने लगे। जिन्होने तिरपाल में छेद कर दिए। अब बारिश का पानी फटे तिरपाल की दरारों और छेदों से आकर छान को गीला तो कर देता मगर छान तिरपाल से ढँकी होने के कारण धूप और हवा छान को सुखा नहीं पाती। जिसके कारण बाजरे की कड़प से बनी छान गलकर सड़ने लगी और उसमें कीड़े पड़ गये।

ऐसी विकट स्थिति का सामना मैंने पहले कभी नहीं किया था। पानी को अन्दर आने से रोकने के लिए छान के चारों तरफ मिट्टी लगाई थी। पर जमीन के नीचे बने चूहों के बिल से होकर पानी आ ही जाता और फटे तिरपाल के कारण ऊपर से भी आता। नतीजा मेरा वहाँ रहना दूभर हो गया। अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर छान में लगे कीड़ों का वंश इतनी तेजी से बढ़ रहा था कि उनके रहने खाने के लिए छान थोड़ी पड़ गई। इधर जमीन के केंचुए, चींटी, चींटे और चूहों का भी यही हाल था। जब दोनों तरफ के जीवों को लगा कि उनका जीवन खतरे में है तो निकल पड़े नई जमीन की तलाश करने। इस अफरा तफरी में छान के कीड़े बूँदों की तरह जमीन पर गिरने लगे तो जमीन के जीवों ने छान का रुख किया। अगर वो बोल पाते तो कहते यह विस्थापन स्वैच्छिक नहीं हमारी मजबूरी है वरना कौन अपनी जगह छोड़ना चाहता है? कब कौन किधर से आ गिरता कहना मुश्किल है। सबने मिलकर स्कूल को खत्म करने का फैसला कर लिया। जैसे उनके विस्थापन के लिए स्कूल ही जिम्मेदार है। इस धमाचौकड़ी के बींच मैं फँस गया। मेरा एक हाथ अपने कपड़े और बालों पर ही फिरता रहता। जिस स्कूल की छान और जमीन ने उन्हें जीवन दिया था, अब वही जीवन आफत बनकर स्कूल के साथ–साथ मुझे भी खत्म करने लगा।

सबसे बड़ी दिक्कत तो तब होती जब मैं गीली जमीन पर बैठकर खाना बनाता। सब्जी, दूध, आटे में कीड़े ना गिरें इससे बचने के लिए मुझे एक हाथ से टावल या छतरी को पकड़ कर चूल्हे और भोजन सामग्री के ऊपर छाया करनी पड़ती। बनने के बाद भी इसी तरह खाना पड़ता। मैं रोज यही सोचता कि ये बारिश के दिन कब खत्म होंगे।

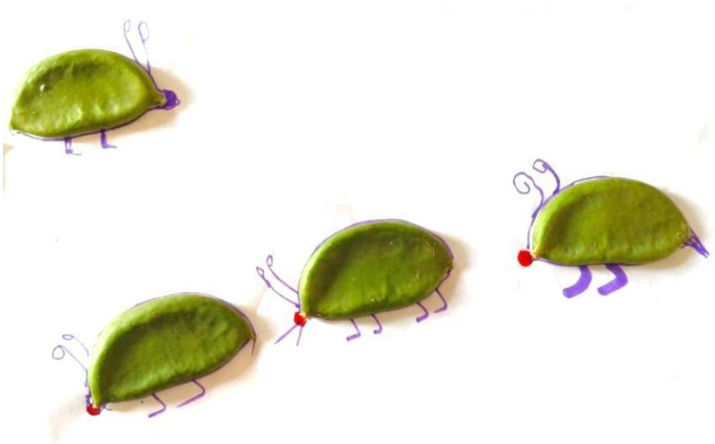

मनीषा बैरवा, फैलो, पुस्तकालय सेंटर, कटार

कहते है बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है। मैं मन से अभी भी मजबूत बना हुआ था पर तन ने जवाब दे दिया। दिन–रात की चिप–चिप, उमस, बारिश और गिरते कीड़ों ने मेरी पीठ पर ऐसी जगह इन्फेक्शन किया की दवा लगाना तो दूर मैं उसे देख भी नहीं सकता था। यह इन्फेक्शन फुंसियों के रूप में पूरी पीठ में फैलने लगा। पीठ के बल सोना क्या कमीज पहनना भी तकलीफदेह हो गया। बच्चे जैसे ही स्कूल से जाते मैं अपनी कमीज उतार देता। मेरे साथी मनीष ने मुझे सरकारी अस्पताल से दवा ही नहीं दिलवाई बल्कि उसे लगाने का काम भी उसी ने किया। अब मैं टापरी में बहुत जरूरी होने या खराब मौसम होने पर ही जाता वरना टापरी के बाहर ही रहता। कीडों और मच्छरों से बचने के लिए मैं मच्छरदानी में सोता। मैंने किसी से कहा नहीं पर अब मुझे घर की याद आने लगी थी। मोबाईल का दौर होता तो शायद बात खुल जाती और मेरा परिवार मुझे आकर ले जाता। इधर मेरे कहने से मेरे साथी की हिम्मत भी टूट सकती थी। इसलिए सारी टीस मन में लिए ठीक होने का इन्तजार करने लगा। दवाओं ने अपना काम किया और इधर मौसम भी साफ रहने लगा तो इन्फेक्शन भी घटने लगा।

बाजरे की उगाही

उदय सामुदायिक पाठशाला सामुदायिक प्रयासों का उदहरण था। जिसे लगातार जारी रखना था। स्कूल में अभी सुविधाओं का बहुत अभाव था जिसे धीरे–धीरे दूर करना था। हमने समुदाय से आर्थिक सहयोग लेने की योजना बनाई और इस विचार को समुदाय के सामने रखा। पर समुदाय ने पैसे की कमी बताकर खारिज कर दिया।

सबका कहना था ज्यादातर लोग किसान हैं और किसान के घर साल में एक बार ही पैसा आता है जब वह फसल बेचता है। तभी वह बच्चों के नए कपड़े खरीदता है, शादी करता है और अन्य जरूरी काम करता है। यदि फसल खराब हो जाए तो फिर कर्ज लेकर अगले एक साल तक संघर्ष करता है।

सवाल था फिर हम अपने स्कूल को किस तरह आगे बढ़ाएँ ?

काफी विचार के बाद तय हुआ जो जिस रूप में सहयोग कर सकता है करे। जैसे–

– कोई श्रम कर सकता है।

– जिसके पास ट्रैक्टर है वह ईंट, पत्थर, बजरी जैसी चीजें ला सकता है।

– अपनी फसल का भी एक हिस्सा दिया जा सकता है।

इस तरह काका बाबू ने राह चलते ट्रैक्टर वालों से कहकर दो ट्रोली पत्थर डलवाए। इसी तरह एक ट्रॉली बजरी भी डलवाई। ये चीजें अभी काम आने वाली नहीं थी। इसलिए हमने बाजरा उगाना तय किया। क्योंकि बाजरा कटकर घर आ चुका था हमने तय किया जो जितना देगा हम उतना ही लेंगे। किसी पर भी अनावश्यक दबाव नहीं डालेंगे।

बैठक में इसे इकठ्ठा करने का जिम्मा भी हमें ही दे दिया। अब तक हम तीन लोग हो गये थे। मैं मुकेश और रमेश। शर्माते तो हम सभी थे पर रमेश कुछ ज्यादा ही शर्माता था। इसलिए बाजरे की उगाही का अधिकांश काम हम दोनों ने ही किया। हम स्कूल टाईम के पहले और बाद में एक खाली बोरा लेकर घर–घर जाते और अपनी बात समझाते हुए इच्छानुसार सहयोग करने को कहते। कोई 5 किलो देता, कोई 10 किलो देता, कोई 15 किलो का पूरा कट्टा ही भर देता। कोई पाँच रुपये देता तो कोई कुछ नहीं देता। महिला–पुरूष और बच्चे जो हमारी इस पहल से अनजान थे उनके लिए कौतूहल था कि ऐसा भी कोई मास्टर होता है? जो घर–घर जाकर बाजरा माँगता है। वे मजाक करते, हँसते, हमारे साथी का मन करता की भाग जाए वहाँ से या फिर कुछ सुना दे इनको। अपनी शर्म को दबाए हम अपने काम में लगे रहे। करीब महीने भर की कोशिश के बाद लगभग तीन बोरी बाजरा जमा हुआ। जिसे बेचकर हमने नगदी प्राप्त की। पैसा बहुत कम था पर समुदाय को जोड़ते हुए फण्ड रेजिंग का हमारा प्रथम प्रयास था। पर इससे हमें हमारी टीम बनाने, झिझक दूर करने और समुदाय से जुड़ने में मदद मिली।

विष्णु गोपाल मीना, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाईमाधोपुर।

बतरस

मेरी तीन बातें

एक बार मैं खेत पर गई और मैंने जाकर घास काटा। फिर आने के लिए भरोटा बाँधा। वो भरोटा मुझसे नहीं उठा। मैंने देखा कि वहाँ कोई भी भरोटा उचाने के लिए नहीं है तो मेरा मन रोने जैसा हो गया।

मैं मोटर साइकिल चलाना सीखना चाहती हूँ। क्योंकि मम्मी को कोई काम हो और कोई ले जाने वाला न हो तो मैं ले जाऊँ। पर मुझे डर है कि सीखते वक्त कहीं गिर न जाऊँ। और तुझे चोट न आ जाए क्योंकि मुझे चोट से बहुत डर लगता है।

मैं रोज सोचती हूँ कि सुबह जल्दी उठकर पढ़ूँ। पर मुझे जल्दी से चेत नहीं होता। और सुबह उजाला हो जाता है। तब उठती हूँ तो मम्मी के कामों में मदद करने लग जाती हूँ। फिर स्कूल चल जाती हूँ। जल्दी न उठने के कारण पढ़ नहीं पाती हूँ।

प्रिया मीना, कक्षा 9 उमंग सेन्टर, जगनपुरा।

भूमिका मीना, शिक्षिका, उमंग सेंटर मखौली

बात लै चीत लै

भालू और बकरी

भालू जानवरों को तो खाता नहीं। बकरी को लगा क्यों न एक ऐसे भी जानवर से दोस्ती की जाए। एक ऐसे जानवर से दोस्ती जो दिखने में बाघ और तेंदुअे की तरह खतरनाक लगता है लेकिन है नहीं। जो भेड़ बकरी और हिरनों जैसे जानवरों का शिकार कतई नहीं करता। भालू को भी यह दोस्ती भा गई। लेकिन भालू हमेशा ही कहता–'मैं तुमसे शरीर में बड़ा हूँ। ताकत में भी।'

'शरीर से बड़े होने भर में ऐसी क्या ताकत है?' बकरी कहती।
'ताकत है। तुम कैसे भी कर लो। मैं हमेशा ही तुमसे जीत जाऊँगा।' भालू कहता।
'ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी।' बकरी बोली।

एक दिन वे एक जंगली नाले पर पानी पीने गए। बकरी ने कहा–'मैं इस नाले को छलाँग मार कर कूद सकती हूँ, मगर तुम नहीं।'

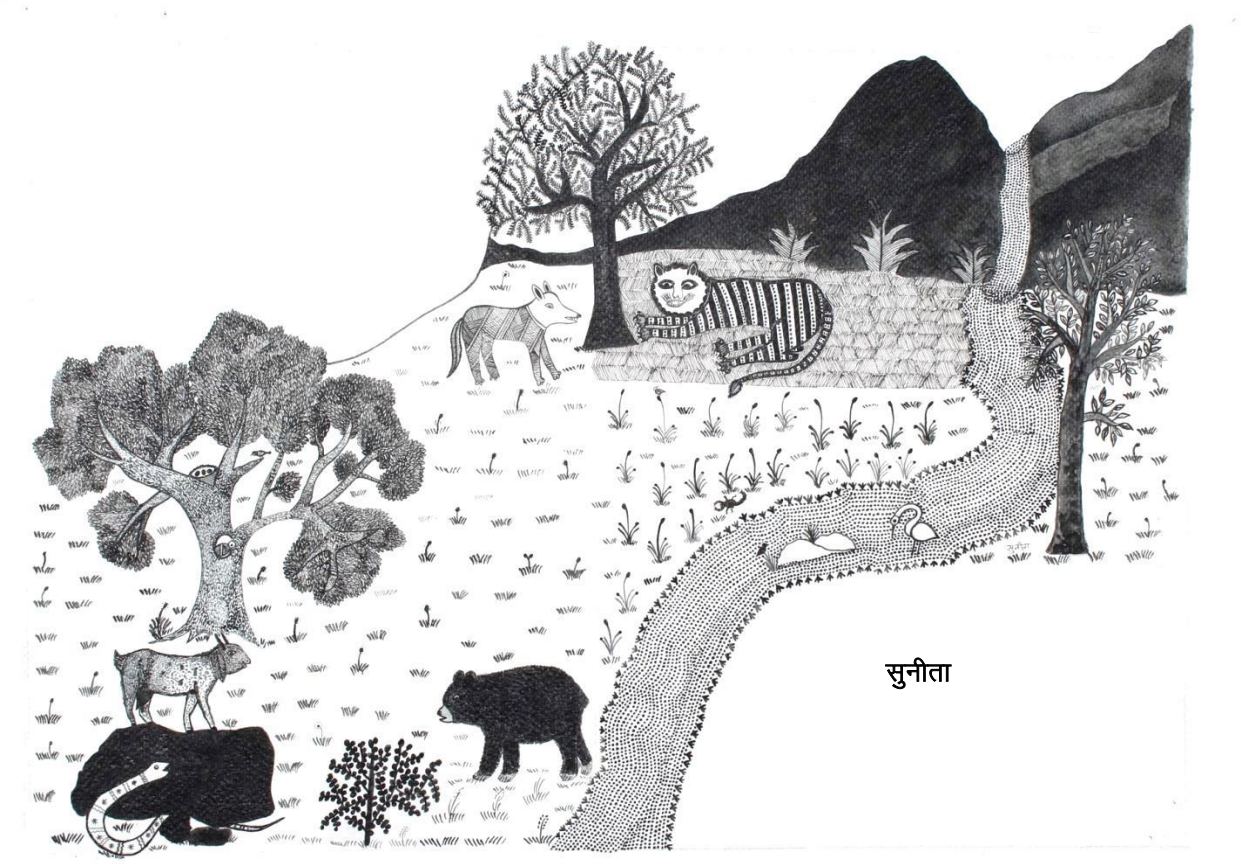

सुनीता

'इसमें ऐसा क्या है, बेचारी बकरी। मैं इसे अभी कूदे देता हूँ।' भालू ने भालू जैसा अपना सिर हिलाते हुए कहा।

'तो कूदो।' बकरी ने कहा। और मन ही मन कहा कि मोटा भालू कहीं का, मुझे बेचारी कहता है।

भालू गुनगुन करता दूर से दौड़कर आया मगर नाले के पास आकर रुक गया। उसकी हिम्मत ने काम नहीं किया।

'फिर से कोशिश करो।' बकरी मन ही मन खुश हुई।

भालू फिर गुनगुन करता आया लेकिन किनारे पर आकर रुक गया। उसकी हिम्मत ने काम नहीं किया।

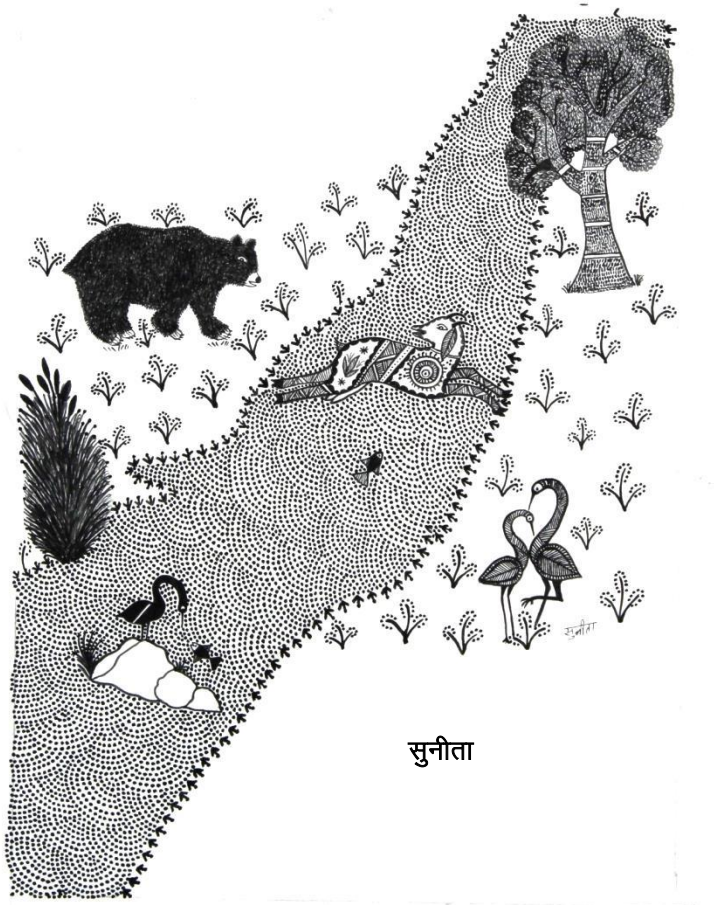

सुनीता

'अगर तुम कूद जाओ।' उसने बकरी से कहा। और मन ही मन कहा–'मैं नहीं कूद पाया। ये बेचारी तो तेज बहते नाले से डरकर ही मर जाएगी।'

मगर बकरी दौड़ती हुई आई। सिर और सींगों को झटकते हुए मेंह्ह् की आवाज निकालती हुए आर से पार हो गई।

भालू तो यह देखकर ही जोर–जोर से हिलता हुआ भाग गया।

कहते हैं तभी से जंगल में अगर कहीं किसी भालू को बकरी दिख जाती है तो वह जोर–जोर से हिलता हुआ भाग जाता है।

इस कहानी को सुनाने वाले जुगनू सहरिया ने तो यह भी कहा कि–अगर तुम्हें जंगल में कभी भालू मिल जाए तो बकरी की तरह मेंह्ह् की आवाज निकाल देना। भालू भाग जाएगा।

'पर भालू के सामने मेरे मुँह से मेंह्ह् की आवाज निकल तो जाएगी न!' ऐसा मैं सोच रहा हूँ।

पुनर्लेखन – प्रभात

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1
ऊँटा रे ऊँटा थारै तीन तरह का खूँटा
खाल थारी दरबड़ी मांस थारा मीठा।

2
कदै तो लागै ठीकरौ, कदै लागै हींग
अेक जानवर इस्यौ जिके पीठ कै
पीछै सींग।

3
राजाजी के बाग मं अेक पढी कथा
हाथ जोड़ कै भोजन कर्‌या, ईकौ अर्थ बता।

4
जल डूबै लोडी तरै, ज लमं तैरै आप
अेक अचम्भौ ऐसौ देख्यौ, बेटी कै
हुयौ बाप।

5
पत्थर पै खेती करे, धरती पै करै खिलाण
सबड़ी कुमाई नं आग लगावै, ऐसौ गाँव
किसाण।

प्रस्तुति – रोहित महावर, फेलो, अल्लापुर।

उदय सामुदायिक पाठशाला कटार के भवन की दीवार पर

हीहीही—ठीठीठी

1

रवि — कल मैंने हवाईजहाज बनाया वो सीधा सूरज से टकराया।

नबी— क्या बात कर रहे हो। फिर ?

रवि — फिर क्या, सूरज के आंख में लग गई। उसने टीचर को शिकायत कर दी।

2

आदमी — ऐसी जिन्दगी से तो मौत अच्छी।

मौत — चलिए आपकी जिन्दगी खत्म।

आदमी— मतलब कोई परेशान आदमी मजाक भी नहीं कर सकता।

3

शिक्षक— इस वाक्य का अंग्रेजी में अनुवाद करो—
'वसंत ने मुझे मुक्का मारा।'

छात्र— वसंतपंचमी।

4

मरीज — मैं सोता हूँ तो सपने में बंदर फुटबॉल खेलते हैं।

डॉक्टर — रात को सोने ये पहले ये गोली खा लेना।

मरीज — कल खाऊँगा, आज तो फाइनल है।

5

पापा—इस बार रिजल्ट कैसा रहा?

बच्चा— पिछली बार से तो अच्छा ही है। पिछली बार रवि से 25 नम्बर कम आए थे इस बार उससे बीस ही नम्बर कम आए हैं।

पापा— रवि के इस बार कितने नम्बर आए हैं?

बच्चा— बीस।

6

मालिक — क्या चाहिए तुझे।

युवक— एक नौकरी। पैसे से भरा कमरा। सुकून की नींद, गर्मी से छुटकारा।

आज वो युवक एटीम गार्ड है।

पहेलियों के जवाब —

1 सिंघाड़ा
2 बिच्छू
3 गिलहरी
4 दही मक्खन
5 अर्थी

2024 में साहित्य की नोबेल पुरस्कार विजेता, कोरियायी लेखिका – हान कांग